प्रसंग – वर्णन

संसार में प्रतिदिन कोई-न-कोई घटना अर्थात प्रसंग घटित होते रहते हैं। इन घटनाओं के चश्मदीदों अर्थात इन्हें देखने वालों का नजरिया अलग-अलग हो सकता है। प्रत्येक घटना अथवा प्रसंग को हर व्यक्ति अपनी विशेष शैली में प्रस्तुत करता है, जिसे प्रसंग वर्णन कहते हैं। कथात्मक रूप से प्रस्तुत किए गए विभिन्न प्रसंगों के वर्णन के दौरान कभी-कभी व्यक्ति स्वयं को भी उस प्रसंग का हिस्सा बना लेता है। इस प्रसंग-वर्णन के दौरान व्यक्ति घटना के संदर्भ में अपनी राय भी रखता है, जिसे अधिक महत्त्व दिया जाता है।

प्रसंग-वर्णन के समय हमें निम्नलिखित बिंदुओं का ध्यान रखना चाहिए:

1. प्रसंग-वर्णन समाज के लिए हितकारी होना चाहिए।
2. प्रसंग-वर्णन यथासंभव सकारात्मक विचारों से ओतप्रोत होना चाहिए।
3. प्रसंग-वर्णन में निजता का भाव होना चाहिए।
4. किसी भी प्रसंग-वर्णन से पहले उस प्रसंग का हर पहलू समझने का प्रयास करना चाहिए।
5. प्रसंग-वर्णन स्पष्ट, संक्षिप्त और सटीक होना चाहिए।
6. लगातार अध्ययन व लेखन से प्रसंग-वर्णन को और अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता है।
7. प्रसंग-वर्णन अशिष्ट, अपरिपक्व और दुर्भावनापूर्ण नहीं होना चाहिए।
8. प्रसंग-वर्णन से किसी व्यक्ति, संस्था, दल, समूह, समाज, धर्म, जाति, भाषा, वर्ण, लिंग, संस्कृति आदि का अपमान नहीं होना चाहिए।

प्रसंग-वर्णन के नमूने

1. **एक दिन दोपहर के वक्त सड़क पार करने के लिए मैं किनारे पर खड़ा था। मैंने देखा कि एक कार बगल की सड़क से निकली। कार चालक मोबाइल पर बात करते हुए कार चला रहा था। उसका ध्यान बँटा हुआ था, इसी बीच दूसरी ओर से एक बड़ी टेंपो उसके सामने आ गई ...**

उत्तर: एक दिन दोपहर के वक्त सड़क पार करने के लिए मैं किनारे पर खड़ा था। मैंने देखा कि एक कार बगल की सड़क से निकली। कार चालक मोबाइल पर बात करते हुए कार चला रहा था। उसका ध्यान बँटा हुआ था, इसी बीच दूसरी ओर से एक बड़ी टेंपो उसके सामने आ गई। मुझे ऐसा लगा कि दुर्घटना तय है, लेकिन टेंपो चालक की समझदारी से कई जिंदगियाँ बाल-बाल बच गईं। इसके बाद वह टेंपो ड्राइवर अपनी गाड़ी से उतरा और उस तरफ कार चालक भी गाड़ी से उतरा, दोनों के बीच काफी तू-तू, मैं-मैं हुई, लेकिन कार चालक अपनी गलती मानने को कतई तैयार नहीं था। इसी बीच ट्रैफिक हवलदार भी वहाँ पहुँच गया। उसने स्थिति का जायजा लिया और जब लोगों से पूछताछ की तो गलती कार चालक की निकली।

ट्रैफिक पुलिसकर्मी ने कार चालक को कार चलाते वक्त आगे से मोबाइल पर बात न करने की नसीहत देते हुए दोनों को वहाँ से रवाना किया। इसके बाद वहाँ जाम हुआ ट्रैफिक आगे बढ़ सका, लेकिन मेरे साथ-साथ जिन लोगों ने इस होते-होते रह जानेवाले हादसे को देखा था, उसके परिणाम के बारे में सोचकर उनके रोंगटे खड़े हो गए थे। मैं भी अपना काम निबटाकर घर लौटा।

दूसरे दिन मैं, मेरी माँ, मेरी बहन और पिता जी मामा जी के यहाँ जाने के लिए अपनी गाड़ी से निकले। कुछ दूर पहुँचते-पहुँचते मामा जी का फोन आ गया, पिता जी अपनी जेब से मोबाइल निकालकर बात करने ही वाले थे कि उस दिन की सारी घटनाएँ एक-एक कर मेरी आँखों के सामने आने लगी और परिणाम के बारे में सोचकर मै एक बार फिर सहम गया। मैंने फौरन ही पापा से मोबाइल माँग लिया और मामा जी को बताया कि हम रास्ते में हैं और जल्द ही पहुँच जाएँगे।

फोन रखकर मैंने पिता जी को उस दिन हुई पूरी घटना वृत्तांत से सुनाई और ट्रैफिक पुलिसकर्मी द्वारा दी गई नसीहत भी बताई। पिता जी यह देखकर काफी खुश हुए कि उनका बच्चा कितनी समझदारी की बातें करने लगा है और उन्होंने वादा किया कि वे अब कभी ड्राइविंग करते वक्त फोन पर बात नहीं करेंगे।

2. **बैंड स्टैंड पर अपने एक दोस्त के साथ घूमते हुए आपको पता चलता है कि तीन लड़कियाँ सेल्फी लेते वक्त समुद्र में गिरते-गिरते बच गईं। सेल्फी के इस बढ़ते जुनून के संदर्भ में अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: अजय के साथ एक दिन मैं बांद्रा स्थित बैंड स्टैंड घूमने साइकिल पर निकला। मेरा दोस्त अजय भी मेरे साथ था। काफी दिनों से हम दोनों की इच्छा थी कि बैंड स्टैंड पर जाकर शाम के वक्त ठंडी-ठंडी हवाओं व सागर की लहरों के बीच एक-एक सेल्फी लेकर फेसबुक पर शेयर करें। परिक्षाएँ थीं, इसलिए यह इच्छा दबी रह गई, लेकिन अब जब परीक्षा खत्म हो गई थी। हम दोनों एक ही साइकिल पर सवार थे।

हमने बैंड स्टैंड पहुँचकर देखा कि कुछ लोग एक जगह इकट्ठा हुए हैं। पास जाकर देखा तो पता चला कि तीन लड़कियाँ सेल्फी लेने की कोशिश कर रही थीं, वह भी समुद्र में कुछ दूरी पर जाकर। इसी बीच उनमें से दो समुद्र की लहरों के थपेड़े सह न सकीं और पत्थर पर से फिसल गईं। हालांकि वहाँ मौजूद लोगों ने उन्हें सुरक्षित बचा लिया, लेकिन एक लड़की का पैर चोटिल हो गया था।

कुछ बुजुर्ग व पुलिसवाले उन लड़कियों व अन्य लोगों को सेल्फी लेते वक्त सुरक्षा बरतने की सलाह दे रहे थे। एक बुजुर्ग व्यक्ति ने बताया कि कुछ दिनों पहले समुद्र के किनारे सेल्फी लेने के जुनून में दो बच्चे जान से हाथ धो बैठे। पुलिस लोगों को समझा रही थी कि सेल्फी लेने के लिए जनता अपनी जान को जोखिम में नहीं डाले।

ये सारी बाते सुनते-सुनते मेरे दिमाग में वे सारी करतूतें कौंधने लगीं, जो सेल्फी के चक्कर में मैंने और मेरे दोस्तों ने की थी। मुझे याद आने लगा कि कैसे दीवार पर चढ़कर मैंने अपनी सेल्फी निकाली। इसके अलावा साइकिल पर स्टंट करते वक्त, समुद्र में लहरों के जोरदार थपेड़ों के बीच, चलती कार में सिर बाहर निकालकर इत्यादि घटनाओं के बारे में मैं सोचकर सिहर उठा। उस क्षण मुझे उन कलाबाजियों की भयावहता का एहसास हुआ। कुछ ऐसा ही एहसास मैंने अपने दोस्त के चेहरे पर देखा।

उसी क्षण मैंने और अजय ने मन-ही-मन ठान लिया कि आज के बाद हम कभी सेल्फी लेने के लिए सुरक्षा नियमों की अनदेखी नहीं करेंगे।

3. **माँ के लाख समझाने के बावजूद मैंने रोज की तरह हाथ-मुँह धोकर नल खुला छोड़ दिया और उस दिन सुबह-सुबह अपने दोस्त राज से मिलने उसके घर पहुँचा। वहाँ एक नल के पास कई डिब्बे व बल्टियाँ देखकर मुझे हैरत हुई और मन में एक सवाल उठा, आखिर पानी के लिए इतनी परेशानी क्यों?**

उत्तर: माँ के लाख समझाने के बावजूद मैंने रोज की तरह हाथ-मुँह धोकर नल खुला छोड़ दिया और उस दिन सुबह-सुबह अपने दोस्त राज से मिलने उसके घर पहुँचा। वहाँ एक नल के पास कई डिब्बे व बल्टियाँ देखकर मुझे हैरत हुई और मन में एक सवाल उठा, आखिर पानी के लिए इतनी परेशानी क्यों? यह सवाल मन में उफान मार ही रहा था कि पानी की कतार में खड़ी राज की माँ ने बताया कि राज घर में पढ़ाई कर रहा है। मैंने घर की तरफ कदम बढ़ा दिए। घर नल के एकदम सामने था। घर में घुसते ही राज ने मेरा स्वागत किया। आज मैं और राज क्रिकेट खेलने बगल के मैदान में जाने वाले थे, लेकिन राज ने बताया कि उसकी चॉल में दो दिन से पानी नहीं आया था। आज पानी आया है, तो माँ के साथ पूरा पानी भरकर ही वह खेलने जा सकेगा। राज से पूछने पर पता चला कि उसकी चॉल में हर दूसरे दिन पानी आता है और यहाँ सिर्फ एक ही नल है। लोग बारी-बारी से पानी भरते है। कभी-कभी तो किसी को पानी भी नहीं मिलता और पानी चला जाता है। पानी के बगैर होनेवाली दिक्कतों का हाल अपने दोस्त के मुँह सुनकर मेरे होंठ सूखने लगे। घंटों तक कतार में खड़े रहना, उसपर भी पानी न मिलना, कभी-कभी पानी के लिए पड़ोसियों का आपस में झगड़ना, यह सब सुनकर मुझे पानी

का महत्त्व समझ में आया।

कुछ देर बाद राज को उसकी माँ ने आवाज दी और वह दौड़कर नल पर पहुँचा। मैनें देखा कि नल पर जैसे एक साथ कई लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी थी। सभी एक-दूसरे से पहले पानी भरना चाहते थे। सभी को यह भय था कि कहीं पानी जल्दी न चला जाए और उन्हें पानी न मिले। इस होड़ में राज की माँ आगे निकल गई। थोड़ी देर में राज डिब्बे भर-भरकर घर में लाकर एक टंकी में पानी उँड़ेलने लगा। तकरीबन 15 मिनट में उसके घर में रखे छोटे-बड़े बर्तन पानी से लबालब हो गए। पानी भरकर राज और उसकी माँ घर में पहुँचे। उनके चेहरे पर एक खुशी थी, ऐसा लग रहा था कि जैसे उन्होंने कोई बड़ी जंग जीत ली है। फिर मैं और राज खेलने निकल गए और इसी बीच पानी की समस्या को देखकर मैने मन-ही-मन यह निश्चय किया कि मैं अब कभी पानी व्यर्थ नहीं बहाऊँगा।

4\. **स्कूल में छुट्टी की घंटी बजी। सारे बच्चे जल्दी-जल्दी अपना बैग बाँधकर अपने-अपने घर की ओर निकल पड़ते हैं। राम भी रास्ते में था कि अचानक उसकी नजर सड़क के किनारे चाय के बर्तन धोते हुए एक बच्चे पर पड़ी, उसकी उम्र बिलकुल राम जितनी थी। राम यह देखकर...**

उत्तर: स्कूल में छुट्टी की घंटी बजी। सारे बच्चे जल्दी-जल्दी अपना बैग बाँधकर अपने-अपने घर की ओर निकल पड़ते हैं। राम भी रास्ते में था कि अचानक उसकी नजर सड़क के किनारे चाय के बर्तन धोते हुए एक बच्चे पर पड़ी, उसकी उम्र बिलकुल राम जितनी थी। राम यह देखकर पहले तो आश्चर्यचकित हुआ, लेकिन एक पल में उसकी समझ में सबकुछ आ गया और उसका चेहरा उतर गया। साफ पता चल रहा था कि राम हम उम्र के बच्चे को अपनी तरह स्कूल के गणवेश व स्कूल बैग के बजाए चाय के बर्तन धोते हुए देखकर बहुत दुखी था।

राम को एहसास हुआ कि उस बच्चे की पारिवारिक स्थिति इतनी अच्छी नहीं कि उसके माँ-बाप उसे पढ़ने के लिए स्कूल भेजें। ऐसे में वह नन्हा-सा बालक खुद मेहनत-मजदूरी कर अपना व अपने परिवार का पेट पालने में अपने परिजनों की मदद कर रहा है। राम की आँखों के आगे जैसे वे सारी घटनाएँ एक-एक कर घूमने लगीं, जब उसके माँ-बाप और बड़ी बहन उसे पढ़ने-लिखने की सीख देते रहते हैं, लेकिन वह किसी की बात नहीं सुनता। दिनभर दोस्तों के साथ खेलना, मौजमस्ती करना, समय पर स्कूल न जाना किसी भी छोटी-बड़ी चीज के लिए जिद कर लेना इत्यादि घटनाएँ उसके दिमाग में एक-एक कर आने लगीं। कैसे वह मिल रही सुविधाओं का नाजायज फायदा उठा रहा है और वह एक मासूम है जो कि अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए और दो वक्त की रोटी के लिए भरी दोपहर में जी- तोड़ मेहनत कर रहा है। दौड़-दौड़कर ग्राहकों को कभी चाय पहुँचा रहा है, तो कभी बर्तन साफ कर रहा है।

उसी क्षण राम को अपनी गलतियों का एहसास हुआ। धीरे-धीरे अपने घर की ओर कदम बढ़ाते हुए उसने मन में ठान लिया कि आज के बाद वह मन लगाकर पढ़ाई करेगा और अपने माता-पिता व बड़ी बहन की आज्ञा का पालन करेगा।

स्वाध्याय

1. रोज की तरह सुबह उठा। ब्रश कर मैं बाल्कनी में आकर खड़ा हो गया। सोसायटी में काफी हलचल मची हुई थी। मैंने देखा रामू काका सभी को सफाई के दिशानिर्देश दे रहे हैं...

2. जंकफूड का बढ़ता सेवन खानेवाले की सेहत पर काफी बुरा प्रभाव छोड़ रहा है। इसपर अपने विचार लिखिए।

3. रमेश को राज्यस्तरीय टीम में चुना गया – आज स्कूल में स्वागत समारोह - रमेश का अनुभव साझा करना।

4. ...और मेरे पिताजी ने फौरन अपनी सिगरेट बुझा दी। उन्होंने फैसला किया कि आज के बाद वे कभी धूम्रपान नहीं करेंगे।